रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ११: अहं त्वम (तोही मोही)

‘अहं त्वम’, ‘तोही मोही’ वहदतवादी कौशल का दृढ़ जज़्बा है जो किसी को अजनबी नहीं समझता। 'धनसिरी' में गुरु नानक नागाओं से दोस्ती करते हैं।

जो रते सह आपणै तिन भावै सभ कोइ ॥
(राग वडहंस, गुरु नानक)

जो कुदरत के हुक्म के साथ एक सुर हैं उनके लिये कुदरत की हर चीज़ दिलकश है।
(राग वडहंस, गुरु नानक)

गुरु नानक ने कहा है कि किसी विशेष कारण के तहत किसी चीज़ के प्रति मोह दुख का कारण बनता है। उनका सुझाव है कि बख़्शिश का अहसास करने के लिये हर उस कारण से अलगाव लाज़मी है जो सुख या दुख का कारण बनता है।

गुरु नानक और भाई मरदाना ने गुवाहाटी से ब्रह्मपुत्र नदी के साथ-साथ धनसिरी घाटी में गोलाघाट का सफ़र किया। इसके बाद वह जैंतिया पहाड़ियों से होते हुये सिलहट और कोलकाता के लिये रवाना हुये। सबसे पहले उन्होंने गुवाहाटी से गोलाघाट का सफ़र किया।

गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये हम गुवाहाटी से गोलाघाट जा रहे हैं। स्थानीय बिरादरी से संवाद करने के लिये हम रास्ते में नगाँव रुके हैं।

पंद्रहवीं शताब्दी में, 'असा' के इलाके पर अहोम राजाओं का शासन था। अब यह इलाका इंडिया के राज्य असम में आता है। अहोम 'शक्ति' के उपासक थे।

नगाँव में असमी मूल के करीब चार हज़ार सिख रहते हैं। उनका दावा है कि वे महाराजा रणजीत सिंह की फ़ौज के उन फ़ौजियों के वंशज हैं जो उन्नीसवीं सदी के पहले दशक में असम आये थे। समय के साथ, असमिया मूल के लोगों ने गुरु नानक के फ़लसफ़े को अपनाया।

राम सिंह: गुरु नानक देव जी धर्म प्रचार के लिये असम आये थे। गुरु नानक की शिक्षाओं के अनुसार हम नियमित रूप से बाणी पढ़ते हैं। ईमानदारी वाली ज़िंदगी बसर करते हैं। हम काम करते हैं और अपनी नेक कमाई से बेघर और ज़रूरतमंदों की मदद करते हैं। हम सभी असमिया सिख, बरकोला में रहते हैं। हम असमिया संस्कृति में रचे-बसे हैं लेकिन मज़हब की दृष्टि से हम गुरु नानक के सच्चे सिख हैं।

नगाँव में हम महापुरुष श्रीमंता शंकरादेवा के मंदिर जा रहे हैं, यह मंदिर उनके जन्म स्थान बोरदोआ में है।

('गुनोमाला' ग्रंथ का गायन)

महापुरुष श्रीमंता शंकरादेवा पंद्रहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के अनुयायी थे और गुरु नानक के समकालीन थे। दोनों ने वहदत के मार्ग की अद्वैतवाद के ज़रिये वकालत की और जाति के सामाजिक पदानुक्रम का खंडन करते हुये निस्वार्थ सेवा का प्रचार किया।

दिव्य के साथ ख़ूबसूरत आत्मा विराजमान है ॥
जो सृजनहार की विशेषता का बयान कर रही है ॥
(महापुरुष श्रीमंता शंकरादेवा)

हमें गुरु नानक की नामलेवा संगत और महापुरुष श्रीमंता शंकरादेवा के अनुयायियों के बीच कई व्यावहारिक समानतायें नज़र आईं। दोनों शबद, कीर्तन और लंगर पर ज़ोर देते हैं। हमे यह देख कर दिलचस्प अनुभव हुआ कि महापुरुष श्रीमंता शंकरादेवा की बाणी का प्रकाश उसी तरह किया जाता है जैसे गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहिब का किया जाता है।

स्थानीय लोककथाओं का दावा है कि गुरु नानक और महापुरुष श्रीमंता शंकरादेवा की मुलाकात इस इलाके में हुई थी। 'जन्मसाखीयों' में दोनों के मिलन का कोई ज़िक्र नहीं आता।

डॉ. संजीब कुमार बोरकाकोटी: गुरु नानक ऐकता के समर्थक थे और अमन का संदेश देना चाहते थे। जब गुरु नानक ने पूर्वोत्तर इंडिया की यात्रा की तो असम के नगाँव ज़िले के गांव बोरदोआ में उनकी शंकरादेवा से मुलाकात हुई। गुरु शंकरादेवा और गुरु नानक का नज़रिया एक था। शंकरादेवा 'गुनोमाला' में लिखते हैं कि बुरे विचारों से छुटकारा पाने का उपाय इलाही सोच-विचार है। गुरु नानक ने भी जपुजी साहिब में यही बात लिखी है।

नगांव की यात्रा के बाद हम गोलाघाट से सफ़र आगे बढ़ा रहे हैं।

जब गुरु नानक और भाई मरदाना धनसिरी घाटी में धनसिरी नदी के तट पर गोलाघाट पहुंचे तो उनकी मुलाकात स्थानीय जनजातियों के 'नागा' लोगों से हुई । सामाजिक और क्षेत्रीय स्तर पर 'नागा' किसी भी बाहरी व्यक्ति को घुसपैठिया समझते थे और उसे अपनी सुरक्षा के लिये ख़तरा मानते थे।

नागालैंड के लोगों को समझने के लिये हम डॉ. दलजीत सिंह सेठी से मिलने जा रहे हैं।

अमरदीप सिंह: डॉ. सेठी, आप नागालैंड के पले-बड़े हैं और आपने अपनी अधिकांश युवावस्था यहीं बिताई है। आप के विचार मे धनसिरी इलाके में गुरु नानक की यात्राओं की कथाओं का क्या महत्व है?

दलजीत सिंह सेठी: ये इलाके आमतौर पर बाहरी लोगों की पहुंच से बाहर रहे हैं। इस इलाके में सर कलम करने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है। सरकारी कागज़ो में आख़िरी बार सर कलम करने की वारदात उन्नीस सौ तिरेसठ में दर्ज की गई थी। सर कलम करने वाली अंतिम कबीला कोन्याक हैं, जिनके चेहरे पर अभी भी निशान खुदे होते हैं। मुंह पर जितने निशान होते हैं, उस आदमी ने उतने सर कलम किये हैं। गुरु नानक यहां सिख धर्म का प्रचार करने नहीं आये थे। उनका संदेश मानवता की ऐकता का था जो इलाकों, जातियों और मज़हबों की बाँट से ऊपर था।

जब गुरु नानक और भाई मरदाना घाटी से गुज़रे तो उन्हें स्थानीय लोगों की नाखुशी का सामना करना पड़ा।

गुरु नानक ने रूहानी संवाद के माध्यम से 'नागा' लोगों के साथ टकराव को टाल दिया। उन्होंने स्थानीय लोगों को यकीन दिलाया कि उनका एकमात्र मकसद उनसे गोष्टी करना है।

डरीऐ जे डर होवै होर ॥
डर डर डरणा मन का सोर ॥
(राग गौडी, गुरु नानक)

यदि वहदत के सिद्धांत से भटक जाने से डर हो तो डरो।
अगर डर से डर लगता है और ख़ौफज़दा होकर के जीना पड़े तो मन बेचैन रहता है।

(राग गौडी, गुरु नानक)

मनुष्य को केवल ऐकता या वहदत में ऐतमाद और विश्वास खोने से डरना चाहिये। किसी अन्य प्रकार का भय तो सिर्फ़ नकारात्मक सोच को मज़बूत करता है।

भयभीत करने वाली सोच मानवता से निस्वार्थ प्रेम और अटूट विश्वास बनाये रखने के लिये लाज़मी दृढ़ता को कमज़ोर करती है।

सच सिरंदा सचा जाणीऐ सचड़ा परवदगारो ॥
जिन आपीनै आप साजिआ सचड़ा अलख अपारो ॥
(राग वडहंस, गुरु नानक)

कायनाती ऊर्जा ही सच है। इस सच्चाई को पहचानो यही सच्ची पालनहार है।
इसने अपनी सृजना आप की है जो सच्ची, अलख और अपार है।
(राग वडहंस, गुरु नानक)

गुरु नानक और भाई मरदाना ने गोलाघाट से जैंतिया पहाड़ियों से होते हुये जोवाई इलाके को पार किया और बांग्लादेश के मैदानी इलाके सिलहट पहुंचे।

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर जैंतिया पहाड़ियों में से सफ़र कर रहे हैं जो नीम-पहाड़ी इलाका है।

अमरदीप सिंह: जैंतिया पहाड़ियां मेघालय प्रांत के जोवाई ज़िले में स्थित है। जिस समय गुरु नानक और भाई मरदाना इस इलाके से गुज़रे, उस समय स्थानीय लोग कुदरत और शक्ति की पूजा करते थे जो तांत्रिक शिक्षा का ही एक रूप था।

जैंतिया पहाड़ियों में ऐतिहासिक काल के पत्थरों की निशानियां मिलती हैं जो दर्शाती हैं कि मूल निवासी कुदरत के उपासक थे। इस के बाद में मज़हबी मान्यताओं की विविधता इस इलाके में विकसित हुई जिसमें तंत्र और देवी पूजा अभिन्न अंग थे। हाल ही में मूलनिवासी जनजातियाँ ईसाई धर्म में परिवर्तित हुई हैं।

मानव बुद्धि अपनी ताकत का इज़हार करने के लिये संघर्ष करती रहती है। 'बिरादरी सोच' एसी मानसिक प्रवृत्ति है जिसके तहत समान विचारधारा वाले लोग अपने चारों ओर मूर्त और अमूर्त दीवारें बना लेते हैं। ऐसी तंग सोच विश्वव्यापकता के सार के निर्माण में बाधा पैदा करती है। गुरु नानक ने याद दिलाया कि हाज़रा हज़ूर जो कल, आज और कल के निजाम को चलाता है, वह हर जगह मौजूद है लेकिन अपनी उपस्थिति को कभी तस्लीम नहीं करवाता ।

ओह वेखै ओना नदर न आवै बहुता एहु विडाण ॥
(जप, गुरु नानक)

सब उसकी नज़र में हैं लेकिन वह किसी की नज़र में नहीं है। यह सबसे बड़ा आश्चर्य है।
(जप, गुरु नानक)

हम गुरु नानक के पदचिन्हों पर जोवाई जा रहे हैं जहां जैंतिया पहाड़ियों की खड़ी ढलान बांग्लादेश के मैदानी इलाकों में समा जाती है। पहले लोग बांग्लादेश जाने के लिये डौकी नदी में किश्ती से सफ़र करते थे।

जोवाई पहाड़ियों से उतर कर गुरु नानक और भाई मरदाना ने सिलहट जाने के लिये किश्ती की सवारी की।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-बांग्लादेश सीमा को कुछ निश्चित नाकों से ही पार किया जा सकता है। इसलिये हम हवाई जहाज़ के रास्ते इंडिया से बांग्लादेश गये और सिलहट से गुरु नानक के पदचिन्हों पर अपना सफ़र आगे बढ़ाया।

एक ही मां ने दो बच्चों को जन्म दिया है
एक हिंदू और दूसरा मुसलमान।
दोनों का जन्म एक ही घर में हुआ है।
दोनों को एक ही मां ने स्तनपान कराया है।
(नालोन फ़कीर)

सिलहट शहर ब्रह्मपुत्र घाटी के दक्षिण में सूरमा नदी के पास स्थित है। चौहदवीं शताब्दी से पहले, सिलहट पर बौद्ध और हिंदू राजाओं का शासन था। गुरु नानक के समय में इस पर बंगाल सल्तनत का शासन था।

सिलहट को बांग्लादेश के सबसे महत्वपूर्ण रूहानी, सांस्कृतिक और व्यावसायिक शहरों में से एक माना जाता है।

हम सिलहट में तुर्की मूल के सूफ़ी संत शाह जलाल की मज़ार पर जा रहे हैं जिनका जन्म बारह सौ इकहत्तर में हुआ था।

मुसलमान कुरान और इलसामी ग्रंथ पढ़ते हैं।
हिंदू वेदों और पुराणों से मार्गदर्शन लेते हैं।
मुसलमान उसे अल्लाह कहते हैं।
हिंदू उसे 'भगवान' पुकारते हैं।
(नालोन फ़कीर)

शाह जलाल बंगाल के सबसे प्रतिष्ठित सूफ़ी संतों में से एक हैं जो सिलहट में तेरह सौ छियालीस में फ़ानी दुनिया से विदा हुये। शाह जलाल ने अपनी ज़िंदगी का अधिकांश समय उच्च और मुल्तान में बिताया था जो अब पाकिस्तान में है। वह सूफ़ी सिलसिले के हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के साथ दिल्ली चले गये थे और बाद में इस्लाम का प्रचार करने के लिये सिलहट में बस गये।

अमरदीप सिंह: सिलहट में यह वह जगह है जहां महबूब सूफ़ी संत शाह जलाल दफ़न हैं। सिलहट में गुरु नानक इस स्थान पर भी आये थे और उन्होंने मज़ार के तत्कालीन रूहानी रहबर के साथ गोष्ट की थी।

विलायत वाली जन्मसाखी में 'असा' इलाके का ज़िक्र आता है कि जहां गुरु नानक की मुलाकात शाह जलाल के रूहानी उत्तराधिकारी शेख़ फ़रीद से हुई थी।

हमारी मुलाकात शाह मुहम्मद ख़ान से हुई जो इस वक़्त शाह जलाल की मज़ार के सेवादार हैं।

अमरदीप सिंह: जनाब, बाबा नानक के बारे में आपके सिलसिले में क्या लिखा है?

शाह मोहम्मद ख़ान: अरबी में हम सभी अक्षरों को वज़न देते हैं। अलिफ़, बे, ते, से - सबका वज़न है। गुरु नानक के नाम का अरबी में वज़न निर्धारित करने के लिये हमारे बाबा ने इस जोड़ को किताब में लिखा। इस

सिलसिले का नाम लें और चार से गुणा करें। फिर पाँच से गुणा करें, फिर बीस से और बाद में फिर तीन बार नौ से और अंत में दो जमा करें। इस तरह गुरु नानक और हज़रत मुहम्मद साहिब के नामों का वज़न बराबर हो जाता हैं। हज़रत मुहम्मद कहते हैं कि इस कायनात का संपूर्ण अस्तित्व सृजनहार की बदौलत है। हमें यही कुछ गुरु नानक की शिक्षाओं में भी यही मिलता है। आप चाहें तो इस मंत्र की सच्चाई को प्रमाणित कर सकते हैं।

'गुर तीरथ संग्रह' में तारा सिंह नरोत्तम ने ज़िक्र किया है कि गुरु नानक की सिलहट की यात्रा की याद में एक गुरुद्वारा बनाया गया था। अब इस गुरुद्वारे का कोई निशान नहीं बचा है। गुरुद्वारे की सेवा-संभाल करने वाले और गुरु नानक के अनुयायी उन्नीस सौ सैंतालीस के विभाजन के दौरान यहां से चले गये थे।

बांग्लादेश के सिलहट से, गुरु नानक और भाई मरदाना ने किश्ती से और मैदानी इलाकों के रास्ते इंडिया के कोलकाता का सफ़र किया जिसे कलकत्ता भी कहा जाता है।

मौजूदा दौर में सियासी कारणों से इंडिया-बांग्लादेश सीमा को कुछ निश्चित नाकों से ही पार किया जा सकता है। इसलिये हम हवाई जहाज़ के रास्ते बांग्लादेश से इंडिया गये और कोलकाता से गुरु नानक के पदचिन्हों पर चलते हुये अपना सफ़र जारी रखा।

कोलकाता इंडिया के राज्य पश्चिम बंगाल की राजधानी है। इस शहर का नाम 'काली' देवी के नाम पर रखा गया है।

अमरदीप सिंह: हुगली नदी के किनारे पर स्थित कोलकाता गुरु नानक के समय में कालीघाट नाम का छोटा सा गांव होता था और कुछ समय पहले तक इसका नाम कलकत्ता भी था।

कोलकाता, रवींद्रनाथ टैगोर की जन्मभूमि है जो साहित्य के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले पहले ग़ैर-यूरोपीय थे। बंगाली दार्शनिक शायर टैगोर ने इंडिया और बांग्लादेश के राष्ट्रगान लिखे हैं। टैगोर के हृदय में गुरु नानक का बहुत सम्मान था। जब टैगोर को एक अंतर्राष्ट्रीय गान लिखने के लिये कहा गया, तो उनका जवाब था, "यह गुरु नानक ने सोलहवीं शताब्दी में लिख दिया था। वह सिर्फ़ पूरी दुनिया का ही नहीं बल्कि कायनात का भी तराना है।" गुरु नानक ने हाज़रा-हज़ूर की प्रशंसा में 'आरती' लिखी, जिसका रवींद्रनाथ टैगोर ने बंगाली में अनुवाद किया। उन्होंने इसे अपने ख़ासूसी संगीत में संगीतबद्ध किया जिसे 'रवींद्र संगीत' कहा जाता है।

मनुष्य को आरती कैसे करनी चाहिये? ओ दुनिया के सृजनहार और संहारक, आपकी आरती।
विवेक के अनंत अमृत की प्रतिध्वनि तन-मन में पड़ती है।
आकाश वह थाली है जिसमें सूर्य और चंद्रमा दीपक हैं
तारे और तारामंडल कीमती हीरे हैं।
चंदन की खुशबु धूफ़ है हवा चौर है
और वनस्पति प्रकाशवान हाज़रा-हज़ूर के लिये चढ़ावा हैं।
(राग धनासरी, गुरु नानक)

हम अब बड़ा बाज़ार में गुरुद्वारा बड़ा सिख संगत जा रहे हैं। यह गुरुद्वारा गुरु नानक की कोलकाता आने की याद में बनाया गया है।

<<कीर्तन>>

हमें स्थानीय बंगालियों से बात करने का अवसर मिला, जो गुरु नानक के वहदत के फ़लसफ़े से सकारात्मक रूप से प्रभावित हुये हैं। यह दिल छू लेने वाला अनुभव है कि वे अपने-अपने तरीके से गुरु नानक के वहदत के संदेश को फैलाने में लगे हुये हैं।

रंग रता मेरा साहिब रव रहिआ भरपूर ॥
(गुरु नानक)

सृजनहार प्यार में रंग-रंजित है। वह सर्व-व्यापक और हर कण में है।
(गुरु नानक)

काकोली राय चौधरी: हमारा बंगाली कीर्तन जत्था है। यह मेरे पति गौतम राय चौधरी हैं और यह मेरे भाई प्रलोय रणदीप हैं। हमने 'कीर्तन' का सफ़र तेतीस साल पहले गुरुद्वारा बड़ा सिख संगत से शुरू किया था। हमने सब कुछ इसी से पाया है। 'कीर्तन' ही हमारा सब कुछ है। हम गुरु नानक के शबदों को गाना चाहते थे। मैं भाग्यशाली हूं कि मैं संगत के सामने कीर्तन करती हूं।

आपे रसीआ आपि रस आपे रावणहार ॥

आपे होवै चोलड़ा आपे सेज भतार ॥
रंग रता मेरा साहिब रव रहिआ भरपूर ॥
(गुरु नानक)

वह स्वयं रसिया है, स्वयं रस है और स्वयं मदमस्त है।
वह स्वयं दूल्हा है। वह स्वयं दुल्हन है। वह स्वयं सेज संगी है।
मेरा साहिब प्रेम के रंग में रंगा है। वह सर्वव्यापी ओर भरपूर है।
(गुरु नानक)

रंजिका राय: नमस्कार। मैं रंजिका राय हूं। मैं पश्चिम बंगाल कोलकाता से हूँ। मैंने गुरु ग्रंथ साहिब का बांग्ला में अनुवाद किया है ताकि जो लोग गुरुमुखी पढ़ना नहीं जानते वे बंगाली में पढ़ सकें। यह लिप्यांतर है और यह अनुवाद है,

অশংখো ভাবে জোপিছে, তোমায কোতো অশংখো জনে ॥
আতো অশংখো পূজা, তোপ আতো ভক্তো সাধনে ॥
শংখা নাহী কোতো গ্রংথো, বেদ পাঠ করে ॥
(গুরু নানক)

असंख्य ध्यान। असंख्य जज़्बात।
पूजा के असंख्य रूप। असंख्य तपस्या और संयम।
असंख्य ग्रंथ, करम-कांडी पाठ और ज्ञान की पोथियां।
(जप, गुरु नानक)

मैं सोचती हूँ कि यह महान संदेश सीमित घेरे में नहीं रहने चाहिये। इन्हे दूनिया के हर कोने मे फैलाना चाहिये।

गुरुद्वारे से आते समय हमने पहलवानों को अभ्यास करते देखा। उन्हें देखकर मुझे मन के भीतर बैठे पांच पहलवानों- काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार- के साथ मलयुद्ध करने के गुरु नानक के संदेश की गूंज महसूस हुई। मैं आत्मिक तौर पर रोज़ाना इन पांच शक्तिशाली विकारों के ख़िलाफ़ मलयुद्ध करता हूं और उस दिन का इंतज़ार कर रहा हूं जब मैं इन पर जीत हासिल कर लूंगा।

अवर पंच हम एक जना किउ राखउ घर बार मना ॥
मारहि लूटहि नीत नीत किस आगै करी पुकार जना ॥
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

हे मन, वह पाँच हैं और मैं फ़ानी अकेला हूँ। मैं अपने घर-बार की रक्षा कैसे कर सकता हूं?
वे मुझे हर रोज़ मारते-पीटते हैं। मैं उनके ख़िलाफ़ किस के आगे फ़रियाद करूं?
(राग गौड़ी, गुरु नानक)

कोलकाता से हम गुरु नानक के पदचिन्हों से थोड़ा घुमाव लेकर जोय्देव केंदुली के स्थल पर पश्चिम बंगाल के बीरभूम ज़िले में जा रहे हैं ताकि हम भगत जैदेव की स्मृति से सहभागी हो सकें।

जय पद्मावती ॥
तेरा वास बीरभूम के गांव केंदुली में है ॥
जय जय जैदेव ॥

हम भगत जयदेव की याद में बने राधाबिनोद मंदिर जा रहे हैं।

जय जय जैदेव ॥

इस मंदिर में 'बाउल' और फ़कीर आते हैं और भगत जयदेव के रहसयवादी गीतों का गायन करते हैं।

उन्होंने गांव केंदुली सासन में बैठ कर 'गीत गोबिंदा' लिखा।
उन्होंने मनुष्य की भौतिक अस्तित्व के बारे लिखा।

साधु चरणदास: 'जय गुरु'। मैं साधु चरणदास हूं और यह कंगाल चरणदास है। हमारी ज़िंदगी का उद्देश्य गाना है। हमारे पिता ने हमारे नाम 'साधु' और 'कंगाल' रखे। अगर कोई कंगाल है तो साधु बन सकता है। अगर कोई साधु है तो वह कंगाल ही रहता है। इच्छा के बिना गुरु नहीं मिलता। जयदेव ने 'गीत गोबिंद' लिखा। गुरु जयदेव और गुरु नानक का फ़लसफ़ा एक है। इच्छा के बिना गुरु नहीं मिलता। जयदेव ने 'गीत गोबिंद' लिखा। हमारे पिता सूरदास बाउल ने हमें बाउल परंपरा से जोड़ा था। यह परंपरा कई पीढ़ियों से हमारे परिवार का हिस्सा रही है। जय गुरु।

उन्होंने 'गीत गोबिंदा' लिखा।
उन्होंने मनुष्य के भौतिक अस्तित्व के बारे में लिखा।
वह जगत के गुरु है।
जय जय जैदेव।

तेरहवीं शताब्दी के संत भगत जयदेव का जन्म इसी गांव में हुआ था। वह उच्च कुल ब्राह्मण थे। उनका झुकाव रूहानियत की ओर था। उन्होंने अपनी पत्नी पद्मावती के साथ वैवाहिक मिलता की मिसाल कायम की। दोनों ने मिलकर आमानवीय 'सती' प्रथा की नाइंसाफ़ी को चुनौती दी। इस प्रथा के तहत पत्नी अपने पति की चिता में जिंदा भस्म हो जाती थी।

बेनीमाधो अधिकारी: गुरु नानक ने भगत जैदेव की बाणी का संग्रह किया। सिख धर्म को मानने वाले भी भगत जैदेव को मानते हैं। यह भगत जैदेव का जन्म स्थान है।

केवल राम नाम मनोरमं ॥
बद अंमृत तत मइअं ॥
(भगत जैदेव - 'गुरु ग्रंथ साहिब')

सिर्फ़ आत्म-पड़चोल से मन को चैन मिलता है।
वहदत का अमृत हक़ीक़त का सार है।
(भगत जैदेव - गुरु ग्रंथ साहिब)

भगत जयदेव अपनी गीतात्मक कविता 'गीत गोबिंद' के लिये प्रसिद्ध हुये जिसमें उन्होंने कृष्ण के प्रेम, वफ़ा, समर्पण और आखिर में अपनी प्रिय राधा के पास वापसी की कथा की है। रमज़ के तौर पर यह मानवीय रूह का प्रतिनिधित्व करती है जो सृजनहार की सच्ची आज्ञाकारिता से भटक जाती है लेकिन अंततः लौट आती है और उसी में लीन हो जाती है।

गुरु नानक और भगत जयदेव कभी नहीं मिले, लेकिन उनका वहदत का फ़लसफ़ा और महिलायों के हक़ूक़ के बारे में सोच एक है। भगत जयदेव की बाणी को गुरु ग्रंथ साहिब में शामिल किया गया है।

अरध कउ अरधिआ सरध कउ सरधिआ सलल कउ सलल संमान आइआ ॥

बदत जैदेउ जैदेव कउ रंमिआ ब्रहम निरबाण लिव लीण पाइआ ॥

मैं उसी की आराधना करता हूँ जो इसके काबिल है और मैं उसी पर यकीन करता हूं जो यकीन के काबिल है। जैसे पानी, पानी में मिल जाता है, उसी तरह अपनी सच्चाई से एक हो जाओ।
जैदेव ने कहा कि मैं एक में विलीन हो गया हूं। जो ब्रह्म है और निर्बाण है।
(राग मारू, भगत जैदेव)

भगत जयदेव हमें उस वाहिद के साथ इत्तेफ़ाक करने के लिये प्रेरित करते हैं, जिनका निवास अंदर भी है और बाहर भी।

बंगाल के इस इलाके की 'पाल' बिरादरी देवी-देवताओं की मिट्टी की मूर्तियां बनाने के लिये जानी जाती है।

जोय्देव केंदुली के सफ़र के दौरान हमने बन रही मूर्तियां देखी जिनके सिर नहीं थे। मैं सोचता हूँ कि यह सिरविहीन मूर्तियां गुरु नानक के गहरे संदेश को पेश करती हैं कि इलाही नूर का बीज बोने के लिये अहंकार का सिर कलम करना लाज़मी है।

मसतक काट धरी तिस आगै तन मन आगै देउ ॥
नानक संत मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जस लेउ ॥
(राग रामकाली, गुरु नानक)

मैं अपना अहंकार आपको समर्पण करता हूं और शरीर व दिमाग भेंट करता हूं।
नानक ने कहा कि संतों की संगति में सच पाया जाता है। सहज से यश मिलता है।
(राग रामकाली, गुरु नानक)

चर्चा के लिए कुछ संकेतक

रूपक, गुरु नानक के कदमों की रुहानी छाप

एपिसोड ११: अहं त्वम (तोही मोही)

यह एपिसोड की चर्चा रूपरेखा आपको पूर्वोत्तर भारत और बंगाल में गुरु नानक की परिवर्तनकारी यात्राओं में गहराई से उतरने के लिए आमंत्रित करती है। उनकी यात्राओं के समृद्ध संदर्भ और दार्शनिक आयामों का अन्वेषण करके, हम यह उजागर करते हैं कि गुरु नानक ने सांस्कृतिक सीमाओं को कैसे पार किया और विभिन्न समुदायों से जुड़कर विभिन्न परिदृश्यों में अपनी एकता की शक्तिशाली संदेश साझा की। उनकी स्वदेशी लोगों और विभिन्न परंपराओं के रुहानी व्यक्तियों के साथ सार्थक बातचीत उनके मूल सिद्धांतों के अडिग कार्यान्वयन को उजागर करती है। इन यात्राओं का स्थायी प्रभाव उन समुदायों की निरंतर उपस्थिति में स्पष्ट है जो उनकी दर्शनशास्त्र से प्रभावित हैं, स्मारक स्थलों के संरक्षण में, और उनकी वाणियों के प्रस्तुतीकरण और अनुवाद के माध्यम से उनके ज्ञान को साझा करने के निरंतर प्रयासों में। इन यात्राओं की स्थायी प्रभावशीलता उन जीवंत समुदायों के माध्यम से स्पष्ट होती है जो उनकी दर्शनशास्त्र से प्रेरित सिद्धांतों का पालन करते हैं, महत्वपूर्ण स्थलों के संरक्षण में योगदान देते हैं, और संगीत, अनुवाद और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम से उनके ज्ञान के प्रसार में लगे रहते हैं। इन चर्चा बिंदुओं में संलग्न होकर हम यह पहचान सकते हैं कि गुरु नानक की यात्राएँ मात्र भौतिक गमन नहीं थीं, बल्कि गहन रुहानी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान थीं। ये आदान-प्रदान आज भी उन समकालीन श्रोताओं के साथ प्रतिध्वनित होते हैं जो उनकी शाश्वत एकता, सांसारिक आसक्ति से विरक्ति और सभी प्राणियों में निहित दिव्य तत्व की पहचान के संदेश को समझने का प्रयास कर रहे हैं।

ऐतिहासिक चर्चा संकेतक:

१. गुरु नानक की पूर्वोत्तर क्षेत्रों में यात्रा से हम कौन-से मूल्यवान दृष्टिकोण प्राप्त कर सकते हैं?

एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि गुवाहाटी से, गुरु नानक और भाई मरदाना ब्रह्मपुत्र नदी के साथ गोलाघाट, धनसिरी घाटी तक गए। इसके बाद, उन्होंने जयंतिया पहाड़ियों को पार किया और सिलहट तथा कोलकाता तक अपनी यात्रा जारी रखी। उनके विभिन्न समुदायों और रुहानी परंपराओं के साथ हुए संवादों को भौगोलिक दृष्टि से समझने से विभिन्न संस्कृतियों के बीच गहरे संबंध और आपसी प्रभाव कैसे उजागर होते हैं?

२. १५वीं शताब्दी के असम की क्षेत्रीय शक्ति संरचनाओं और विश्वास प्रणालियों ने गुरु नानक के अनुभवों को कैसे आकार दिया?

एपिसोड में उल्लेख किया गया है कि १५वीं शताब्दी में 'अस्सा' क्षेत्र, जो अब असम राज्य का हिस्सा है, अहोम राजाओं के शासन में था। वे 'शक्ति', स्त्री जीवन शक्ति, के उपासक थे। इस सांस्कृतिक संदर्भ ने गुरु नानक के एकता के संदेश के प्रसार में कौन-सी चुनौतियाँ और अवसर प्रस्तुत किए होंगे?

३. धनसिरी घाटी में नागा जनजातियों के साथ गुरु नानक के संवाद की क्या विशेषताएँ थीं?

एपिसोड के अनुसार, सामाजिक रूप से क्षेत्रीय, 'नागा' किसी भी बाहरी व्यक्ति को घुसपैठिए और अपनी सुरक्षा के लिए संभावित खतरे के रूप में देखते थे। डॉ. दलजीत सिंह सेठी आगे बताते हैं, "एक रुहानी संवाद के माध्यम से, गुरु नानक ने 'नागा' जनजातियों के साथ टकराव को कम करने में सफलता प्राप्त की। उन्होंने समझाया और आश्वस्त किया कि उनकी घाटी की यात्रा का उद्देश्य केवल वहां के निवासियों के साथ संवाद करना था।" यह घटना गुरु नानक के सांस्कृतिक बाधाओं को पार करने के दृष्टिकोण को कैसे दर्शाती है?

४. अस्सा क्षेत्र में गुरु नानक और शेख फरीद की भेंट का ऐतिहासिक महत्व क्या हो सकता है?

'विलायतवाली जनमसाखी' के अनुसार, इस भेंट का एक महत्वपूर्ण क्षण तब आया जब गुरु नानक शाह जलाल से मिले, जो शेख फरीद के रुहानी उत्तराधिकारी थे। यह घटना इन प्रभावशाली हस्तियों की समृद्ध रुहानी विरासत और आपसी संबंध को रेखांकित करती है। यह परस्पर धर्मीय संवाद गुरु नानक की यात्राओं के किन महत्वपूर्ण आयामों को उजागर करता है?

५. गुरु नानक की ऐतिहासिक उपस्थिति ने सदियों से स्थानीय समुदायों को कैसे प्रभावित किया है?

नागांव में, लगभग ४,००० सिखों का एक छोटा लेकिन महत्वपूर्ण समुदाय है, जिनकी असमिया मूल की जड़ें हैं। वे गर्व से अपने पूर्वजों की वंशावली महाराजा रणजीत सिंह की सेना के उन सैनिकों से जोड़ते हैं, जो १८०० के दशक की शुरुआत में पहली बार असम आए थे। यह समृद्ध विरासत दर्शाती है कि समय के साथ, असमिया मूल के लोगों ने न केवल गुरु नानक के दर्शन को अपनाया, बल्कि इसे अपनी सांस्कृतिक पहचान में भी समाहित किया। यह जानकारी हमें उनकी यात्राओं के स्थायी प्रभाव को समझने के लिए क्या अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जो तत्काल ऐतिहासिक संदर्भ से कहीं आगे तक विस्तारित हैं?

दार्शनिक चर्चा संकेतक:

१. "अहम् त्वम्" (मैं तुम हूँ) की अवधारणा गुरु नानक की अद्वैतवादी दर्शनशास्त्र की मूल भावना को कैसे संजोती है?

एपिसोड की शुरुआत "'अहम् त्वम्', 'मैं तुम हूँ', एक अद्वितीय अद्वैतवादी की अडिग भावना को प्रस्तुत करता है, जिसने कभी किसी को पराया नहीं समझा।" यह मौलिक सिद्धांत किस प्रकार पूर्वोत्तर भारत और बंगाल के विभिन्न समुदायों के साथ उनके संवादों की आधारशिला बनता है?

२. आसक्ति, विरक्ति और आनंद के अनुभव के संबंध में गुरु नानक कौन-से अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं?

गुरु नानक कहते हैं कि किसी भी चीज़ से किसी विशेष कारण से जुड़ाव दुख उत्पन्न करता है। आनंद प्राप्त करने के लिए, वे उन कारणों से विरक्ति की सलाह देते हैं जो सुख या दुख प्रदान करते हैं। यह शिक्षण समकालीन मानव अनुभवों पर कैसे लागू होता है?

३. आंतरिक विकारों के विरुद्ध रुहानी संघर्ष को गुरु नानक कैसे प्रस्तुत करते हैं?

एपिसोड में "पाँच पहलवान - वासना, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार" का संदर्भ दिया गया है और गुरु नानक के वचन का उल्लेख किया गया है कि पाँच विकार हैं, पर वह केवल एक नश्वर प्राणी है। वह अपने हृदय और घर की रक्षा कैसे कर सकता है? प्रतिदिन वे उसे पीटते और लूटते हैं। वह किसके समक्ष शिकायत करे? इन चुनौतियों से निपटने के लिए गुरु नानक कौन-से अभ्यास या मानसिकता अपनाने का सुझाव देते हैं?

४. गुरु नानक के रुहानी संदेशों और महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव के विचारों में क्या समानताएँ हैं?

एपिसोड यह उल्लेख करता है कि महापुरुष श्रीमंत शंकरदेव १५वीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन के एक प्रमुख प्रवर्तक थे और गुरु नानक के समकालीन थे। दोनों ने अद्वैतवाद का मार्ग प्रशस्त किया, द्वैतवाद को नकारा, जातिगत पदानुक्रम की आलोचना की, और निःस्वार्थ सेवा का प्रचार किया। ये समानताएँ १५वीं शताब्दी के भारत में व्यापक दार्शनिक और सामाजिक प्रवृत्तियों को कैसे दर्शाती हैं?

५. गुरु नानक का दर्शन धार्मिक सीमाओं से परे जाकर विविध दार्शनिक परंपराओं के साथ कैसे संवाद स्थापित करता है?

सिलहट में शाह जलाल की दरगाह के संरक्षक का उल्लेख है कि पैगंबर मोहम्मद कहते हैं कि इस ब्रह्मांड में जो कुछ भी अस्तित्व में है, वह ईश्वर द्वारा रचित है। यह वही है जो हम गुरु नानक की शिक्षाओं से ग्रहण करते हैं। यह दृष्टिकोण गुरु नानक के अंतर्धार्मिक संवाद के दृष्टिकोण को कैसे उजागर करता है?